श्री शत्रुंजय-मुक्ति · सा विद्या या विमुक्तये · सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : तृतीयवर्ष 5

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ ANSWER sheet

ऐनरोलमेन्ट नंबर 5

शहर 2021

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	गाय के दूध
(२)	क्रिया
(३)	धर्म
(४)	मुनिसोमचंद्र
(५)	लवसत्तमिया
(६)	विद्या
(७)	मिथ्यादृष्टि
(८)	पुण्य
(९)	मनुष्य
(१०)	सिद्धराज
(११)	योग
(१२)	असद्गुरु
(१३)	अचक्षुदर्शन
(१४)	भूमंडल
(१५)	चैत्यवास
(१६)	आहारक
(१७)	चारित्रमोहनीय
(१८)	त्रिभुवनपालचैत्य
(१९)	पैर
(२०)	लोकपाल

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	संज्वलन लोभ
(२)	राजा महाराजा
(३)	परभाव
(४)	पहिले ३ में से कोई १
(५)	दृष्टि
(६)	आगम प्रणीत
(७)	स्वयं के उपयोग
(८)	जयसिंहसूरि
(९)	उपशम श्रेणी
(१०)	समयश्री
(११)	पांचवे - छट्ठे
(१२)	मोहजनित
(१३)	पापोदय से
(१४)	चतुर्गतिमय
(१५)	सिद्धहेम

(५)	शेष को
(६)	प्रसन्न हो
(७)	सूत्र में
(८)	स्त्री
(९)	चार बार
(१०)	ग्यारह
(११)	आनंद
(१२)	भय, मुश्किल
(१३)	सर्वार्थसिद्ध देवलोक
(१४)	ज्ञान में अत्यंत मग्न
(१५)	अज्ञान
(१६)	देवेन्द्र
(१७)	प्राप्त कराता है
(१८)	काल करे
(१९)	इच्छित स्थान
(२०)	हितैषी

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	त्याग
(२)	मग्न
(३)	करने वाले
(४)	भी

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	8	(६)	2
(२)	9	(७)	1
(३)	7	(८)	3
(४)	5	(९)	6
(५)	10	(१०)	4

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	20
(२)	13
(३)	15
(४)	3517
(५)	2
(६)	11
(७)	1169
(८)	19
(९)	56
(१०)	29

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	12
(२)	×	(२)	19
(३)	✓	(३)	9
(४)	✓	(४)	13
(५)	✓	(५)	5
(६)	✓	(६)	11
(७)	×	(७)	19
(८)	✓	(८)	2
(९)	×	(९)	16
(१०)	×	(१०)	19

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______________________ जांचनेवाले की सही ______________________

प्रश्न - ८

१. पदार्थ के सामान्य धर्म को जानने की जीव की शक्ति दर्शन है। दर्शन चार प्रकार के है। - १) चक्षुदर्शन - चक्षुद्वारा पदार्थ के सामान्य स्वरुप को धर्म को जानने की शक्ति चक्षुदर्शन है। २) अचक्षुदर्शन - चक्षु के बिना चार इन्द्रिय और मनद्वारा पदार्थ के सामान्य धर्म को जानने की शक्ति वह अचक्षुदर्शन है। ३) अवधिदर्शन - मर्यादा में रहे हुओ रुपी पदार्थों के सामान्य धर्म को इन्द्रिय एवं मन के बिना जानने की जीव की शक्ति अवधिदर्शन है। ४) केवलदर्शन - आत्मा द्वारा लोक-अलोक के तीनों काल के सभी रूपी - अरूपी द्रव्यों के सामान्य धर्म को एक ही समय में जानने की जीव की शक्ति वह केवलदर्शन है।

२. सोलह विद्यादेवी के नाम बृहदशांति के सातवी गाथा में है। उनके नाम - रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशृंखला, वज्रांकुशी, अप्रतिचक्रा, पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गौरी, गान्धारी, सर्वास्त्रामहाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, अच्छुप्ता, मानसी और महामानसी ये है। जे श्रावक सम्यकत्व पामेला होय छे, जे भगवाननी आज्ञा मुजब आचरण करे छे अथवा जे अर्थ सब गौण मानकर जिनवाणीने ज जीवन मा उतारे छे, उन सबका रक्षण ये सोलह विद्यादेवी हमेशा करे छे।

३. जब साधक उपशम सम्यकत्व से मोहनीय आदि कर्मों को दबाते हुओ, उपशमित करते हुओ जाता है; वह मार्ग उपशमश्रेणी कहलाता है। पूर्वगत श्रुतज्ञान को धारण करनेवाला, अतिचार रहित चारित्र का पालन करनेवाला, पहले तीन संघयण में से कोई एक संघयण युक्त, ऐसे साधुमहात्मा उपशम श्रेणीपर आरुढ हो सकते है। जो साधु अल्पआयुष्यवाला है और उपशमश्रेणीपर आरुढ हुआ है तब काल करे तो 'अहमिन्द्र' मतलब 'सर्वार्थसिद्ध देवलोक' में जाता है। उपशमश्रेणीवाले आरुढ हुओ महात्मा बीस तरह कर्मप्रकृतियाँ उपशमित करते है। जीव को संसार में परिभ्रमण करते हुओ ज्यादा में ज्यादा चार बार और एक भव में उत्कृष्ट से हो तो दोबार उपशमश्रेणी हो सकती है।

४. उपाध्याय विजयचंद्र जैन शासन को शिथिलाचार के नागपाश में से बचाने के लिए झट रहे थे। उस वक्त शुद्ध आहार भी नहीं मिलता था और शुद्ध क्रिया में साथ भी नहीं मिलती थी। ऐसी परिस्थिती में उपाध्यायजी पावागढ पधारे, वीरप्रभु के दर्शन कर मासक्षमण की तपस्या आरंभ की। उसी वक्त श्री सीमंधरस्वामी के मुख से, शासनदेवी चक्रेश्वरी माताजी ने, उपाध्याय म.सा की प्रशंसा सुनी और उनके दर्शन करने के लिए पावागढ पधारी और दर्शन करके उनको अनशन करने से रोककर उनके हाथ से भविष्य में शासन के अनेक कार्य होने का संकेत दिया। दूसरे दिन ही माताजी के कहेने जैसे ही यशोधन श्रावक संघसहित आकर, उपाध्यायजी का पारणा करके, भालेज पधारकर, आचार्यपदवी देकर, वि.सं. ११६९ में विधिपक्ष की स्थापना हो गयी।

५. जब पू. हेमचंद्राचार्य - सोमचंद्रमुनि थे, तब शासनदेवी ने उनके भाग्य से आकर्षित होकर उन्हे गिरनार तीर्थ पर ले आयी। उसने कहा की, "गिरनार यह एक अद्भुत पहाड है, यहा पर अनेक दिव्य औषधियाँ है, यहा कीगयी मंत्रसाधना जल्दी सिद्ध होती है, मै तुम्हे कितनी ही दिव्य औषधियाँ बताऊँगी और सुनते ही सिद्ध हो जाय ऐसे दो मंत्र दूंगी। एक मंत्र से देवो को बुलाया जा सकेगा और दूसरे एक मंत्र से राजा - महाराजा वश में हो जायेंगे। और देवी ने वो दो मंत्र सुनाये। और बहोत ही दिव्य औषधियां बताई। अभी सूर्योदय नहीं हुआ था तब देवी ने अमृत से भरा कमंडल उनके आगे धरा और वो दो मंत्र भूल न जाने